ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

कुंकणा जाति के लोकगीत

डॉ. हेतल जी. चौहाण
सूरत, गुजरात

दक्षिण गुजरात आदिवासी बहुल प्रदेश है। इसकी तीन मुख्य आदिवासी जातियाँ हैं - धोडिया, कुंकणा और वारली । इनकी बोलियों को इनके ही नाम से क्रमश: धोडिया, कुंकणा और वारली बोली कहते हैं। इन तीनों बोलियों में लोकसाहित्य की दृष्टि से कुंकणा बोली बहुत ही समृद्ध है जिसमें लोकगीत, लोककथा, पहेलियाँ आदि की भरमार हैं।

आज हम यहाँ दक्षिण गुजरात की एक जनजाति कुंकणा जाति के बारे बात करेंगे। कुंकणा जाति दक्षिण गुजरात की एक महत्वपूर्ण जनजाति है। ये लोग महाराष्ट्र के कोंकण प्रांत से गुजरात में आए थे, ऐसा माना जाता है। कोंकण प्रदेश से आए के कारण इन्हें कुंकणा तथा इनकी बोली को कुंकणा बोली कहते हैं।

एक होने अन्य मतानुसार प्राचीन समय में समुद्र किनारे रहनेवाले लोगों को कोंकणा कहा जाता था। फ़ारसी भाषा में समुद्र किनारे रहनेवाले लोगों को कोंकणा कहते हैं। उसी अपर से इस जाति का नाम कुंकणा पड़ा हुआ है।

इस जनजाति के लोग धर्मपुर, वांसदा, आहवा-दांग, कपराडा (गुजरात का दक्षिण विस्तार) तथा महाराष्ट्र के नासिक, धूलिया तथा ढाणे ज़िले में रहते हैं । प्राचीन काल में नर्मदा के दक्षिणी तट के क्षेत्र को अपरांत प्रांत कहा जाता था और इस प्रांत की उत्तरी सीमा दखिण गुजरात के नवसारी क्षेत्र तक फ़ैली हुई थी । इसलिए इस जनजाति को इस क्षेत्र की मूलनिवासी (आदिवासी) मानी जाती है।

दक्षिण गुजरात के कपराडा तालुका में रहनेवाले आदिवासियों का काम-धंधे, मज़दूरी, लेन-देन आदि के संबंध में धरमपुर से अधिक जुड़ाव पेंठ-नासिक से है । और वैसे भी कपराडा-सुथारपाडा क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से नासिक से जुड़े हुए है। इस

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

दृष्टि से भी गुजरात के इस सीमांत प्रदेश के लोगों का संबंध गुजराती भाषा से अधिक मराठी भाषा से है। यही कारण है कि इस बोली में मराठी भाषा के शब्दों की अधिकता हैं।

कुंकणा बोली लोक-साहित्य की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण बोली है । इसमें लोककथा, लोकगीत की मौखिक परंपरा आज भी जीवित है । लोक-कथात्मक गीत इस जाति के लोक साहित्य की मुख्य विशेषता है जिसमें लोककथाएँ लोकगीत के माध्यम से बहती हैं। डॉ. श्यामसुंदर दुबे के मतानुसार - कथात्मक या प्रदीर्घ लोकगीत फुरसत की रचनाएँ हैं जिसका सृजन अघाईयों और चौपालों में हुआ हैं । साहस और शौर्य, चमत्कार और रहस्य, वेदना और करुणा की कथाएँ चौपालों में कउड़े पर बैठा ग्रामीण शताब्दियों से सुनाता आ रहा है । इन्हीं कथाओं को और अधिक सम्प्रेष्य एवम प्रभावशाली बनाने के लिए इनको पद्यात्मकता प्रदान कर दी गई हैं।

कुंकणा जाति के कुछ लोकगीत ऐसे भी है जो किसी ण किसी लोककथा पर आधारित है। जो कुंकणा जनजाति की मान्या, रीतिरिवाज़, कुल संबंधी मान्यता को बारीक़ी से उभारते हैं। उनके कलात्मक गीत लौकिकता और अलौकिकता से युक्त हैं।

गाव झोपी गयात सारा, रातना वाजी गयात बारा
झोंपड़ीमां चिमनी पेटीर नीय मालाग झोपन लागय ...
झोंपड़ीमां चिमनी पेटीर नीय मालाग ...
पहले मूलानी पहली रात
गोष्ठी नवे-नवे रंगन्यात
आजु-बाजु कोन सासयनीय मालाग झोपन लागय ...
झोंपड़ीमां चिमनी पेटीर नीय मालाग ...
ठंडा-ठंडा वारा सासयनीय मालाग झोपन लागय ...
रात करय किर-किर, रहु नको तु दुर-दुर
गली म कुतरा भुकीय नय, मालाग झोपन लागय ...

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

झोंपड़ीमां चिमनी पेटीर नीय मालाग ...
आता बोलाय नीईय रात, रही जाईर मुदानी वात
रहु नको घरमां सासयनीय मालाग झोपन लागय।
झोंपड़ीमां चिमनी पेटीर नीय मालाग ...

अनुवाद:

गाँव सारा सो गया है, रात के बारह बज गये। झोंपड़ी में दिया जल रहा है। मुझे तो नींद आ रही है। झोंपड़ी में दिया जल रहा है। मुझे तो नींद आ रही है। शादी का पहला गौना, गौने की पहली रात, बात नये नये रंगों की (मन में नये नये भाव हैं - सुहाग रात के कारण)। आजु-बाजु से किसी प्रकार की आवाज नहीं आती (सब सो गये हैं)। मुझे तो नींद आ रही है। (पूनो का) चाँद चल-चलकर (आकाश में) उपर चढ़ गया है। चाँदनी फैली हुई है। शीतल शीतल बयार बह रही है। मुझे तो नींद आ रही है। रात्रि किरर... किरर... कर रही है। (हे प्रियतम) तू मुझसे दूर दूर न रह। गली में कुत्ते भौंक रहे हैं। मुझे तो नींद आ रही है। झोंपड़ी में दिया जल रहा है। मुझे तो नींद आ रही है। अब तो रात बितने को है, मुद्दे (शारीरिक मिलन) की बात रह जायेगी। तू घर में ही क्यों छिपा रहता है (मेरे पास क्यों नहीं आता)। मुझे तो नींद आ रही है।

(2)
केम्ब चे पाहेंखलहुन साले
निघले सात नयी,
साले निघले सात नयी ।
निघले सात नयीव साले (2)
चालले झरा झरी,
साले चालेल झरा झरी ।
चालेल झराझरीव साले,
चालेल झरा झरी,
साले चालेल झरा झरी ।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

केम्ब चे ...
पार नार दोनही नयी,
भेगुवर भेगे झाले,
साले भेगुवर भेगे झाले ।
भेगुवर भेगे झालेव साले,
भेगु त कीगळली,
साले भेगु त कीगळली ।
केम्ब चे ...
भेगु त कीगळली व साले,
तुगलेनी जबान दिलह,
साले तुंगलेनी जबान दिलह।
बायको वरहुन कायव जासी,
मरदा वरहुन ये,
साले मरदा वरहुन ये।
केम्ब चे ...
जसी च हलपन टाक व साले,
तसा च तूगला वाढ,
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
निरुगड़ी संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे ...
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
वाळहोंट संयदान टाकुं दे,
माल वाळहोंट संयदान टाकुं दे,
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
मांछी संयदान टाकुं दे,

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

केम्ब चे ...
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
फोंफेड संयदान टाकुं दे,
माल फोंफेड संयदान टाकुं दे,
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
छिंपे संयदान टाकुं दे,
माल छिंपे संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे ...
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
फेदरा संयदान टाकुं दे,
माल फेदरा संयदान टाकुं दे।
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
दिंवडां संयदान टाकुं दे,
माल दिंवडां संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे ...
जराक नमता पड़ रे पाठी चे भावा,
सेनोरी संयदान टाकुं दे,
माल सेनोरी संयदान टाकुं दे।
केम्ब चे पहेंखलहुन साले,
निघले सात नयी,
साले निघले सात नयी।
निघले सात नयीव साले,
चालेल झरा झरी,
साले चालेल झरा झरी।
चालेल झरा झरी झरिव साले,
दरे चे दिपाखलहुन,

www.ijahms.com

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

साले दरे चे दिपाखलहुन।
केम्ब चे पाहेंखलहुन साले
निघले सात नयी,
साले निघले सात नयी।

अनुवाद:

(एक सखी दूसरी से कहती है) - केम्ब नामक पहाड़ की तलहटी से सात नदियाँ - पार, नार, कोलक, तान, मान, पथरी और दमणगंगा - निकली हैं। इनमें पार व नार नदियाँ साथ-साथ बहतीं हैं। इनके मार्ग में दो पर्वत भेगु और तुगला पड़ते हैं। पार ने पहले भेगु पर चढ़ने की कोशिश की। किन्तु भेगु पहाड़ ने नारी जाति के होने के कारण पुकार मचा दी। जो तुगला पहाड़ ने सुनी। उसने पार से कहा कि तुम नारी पर से जाने का प्रयत्न क्यों कर रही हो ? तुम्हें जाना ही है तो मुझ (मर्द) पर से क्यों नहीं जातीं और पार तुगला पर चढ़ने का प्रयत्न करती है किन्तु तुगला समुद्र की लहरों के समान ऊँचा होता जाता है। परिणाम वह चढ़ नहीं पाती। अत: वह पहाड़ से बिनती करती है कि हे मेरे छोटे भाई ! थोड़ा तो झुक ताकि मैं ऊपर चढ़ सकूँ। पहाड़ थोड़ा झुकता है और पार नदी उस पर से बहने लगती है। वह चाहती है कि उसके निशान पहाड़ पर हमेशा बने रहे। अत: बहते-बहते वह तुगला पहाड़ पर पेड़, रेत, मछली, फोफडे (मछली की तरह का एक जीव), शंख, नील (पानी के ऊपर उगने वाली एक वनस्पति), साँप (पानी में रहनेवाले), सेनोरी (नदी तट में रेत में उगने वाली एक वनस्पति) आदि छोड़कर समुद्र से मिलने चल पड़ती है।

इस प्रकार उपर्युक्त गीतों के आधार पर हम कह सकते हैं कि कुंकणा बोली में जनजीवन प्रसिद्ध लोकगीत बहुत ही लयात्मक रूप से अभिव्यक्त हुए हैं। इन गीतों द्वारा आदिवासियों की मान्यताएँ बहुत ही सुंदर रूप से व्यक्त हुई है और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य तो यह हैं कि इन गीतों में भाव की साम्यता ग़जब की हैं।

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

विशेष :

दक्षिण गुजरात के डांग ज़िले के गांवों के से किए साक्षात्कार से मिली जानकारी के अनुसार यह लेख तैयार किया गया है अत: इसमें सन्दर्भ नहीं दिए गए है।

www.ijahms.com